sanskrit class 8 book solution | विज्ञानस्य उपकरणानि

पाठ 11 – विज्ञानस्य उपकरणानि

विज्ञानस्य उपकरणानि
(विभक्ति – प्रयोग)
[आज का युग वैज्ञानिक युग .....दिशा में उपयोगी है ।] **SabDekho.in**

अधुना वैज्ञानिक युगं..... राइट प्रातरौ आविष्कृत वन्तौ ।

अर्थ – आजकल वैज्ञानिक युग को सभी अनुभव कर रहे हैं । आज का मानव वैसा नहीं है जैसा कि सौ वर्ष पूर्व था । विज्ञान से उत्पन्न उपकरण सबों के जीवन में प्रवेश कर लिया है (स्थान पा चुका है ।) नगरों या गाँवों में सभी अपने – अपने कार्यों में विज्ञान के साधनों का व्यवहार (उपयोग) कर रहे हैं । आधुनिक वैज्ञानिक सभी उपकरण विदेशियों के द्वारा अविष्कृत हैं । रेलगाड़ी आजकल लोकप्रिय वाहन है जो दूर – दूर तक जाता है । देश में बहुतों रेल स्टेशने हैं । प्रथम रेल इंजन जार्ज स्टीफेन्शन के द्वारा निर्माण किया गया था । उसी प्रकार छापे का यंत्र के आविष्कार से संसार का उपकार किया । एडीशन नामक अंग्रेज वैज्ञानिक ग्रामोफोन का और बिजली – बल्ब का आविष्कार किया । बिजली उत्पादन के लिए डायनेमो नामक यंत्र अनिवार्य है । उसके आविष्कार के लिए हमलोग माईकल फेराडे नामक वैज्ञानिक के प्रति कृतज्ञ (ग्रहणी) हैं । दूर में स्थित वस्तुओं को निकट का दिखाने वाला दूरबीन नामक उपकरण का आविष्कार इटली देशवासी गैलीलियो नामक वैज्ञानिक ने किया था । रेडियो यंत्र से दूर में स्थित शब्दों को ग्रहण किया जाता है (सुना जाता है) । इसका आविष्कार इटलीवासी मारकोनी महोदय के द्वारा किया गया था । मोटरकार के आविष्कार के लिए ऑस्टीन महोदय प्रसिद्ध हैं । वायुयान को अमेरिका निवासी राइट नामक दो भाईयों ने आविष्कार किया ।

अघुना टेलीविजन यंत्र महदुपकारकं..... नोवल पुरस्कार प्रदीयते ।

अर्थ – आजकल टेलीविजन यंत्र अत्यन्त उपकारी सिद्ध हुआ है । उससे हमलोग घर में बैठकर चित्रों को देख लेते हैं और चित्र में स्थित पात्रों की बोली को भी सुनते हैं । जे . एल . वेयई महोदय इस यंत्र का आविष्कारक हैं । उसी प्रकार कम्प्यूटर यंत्र छोटा होकर भी गणना के लिए , वर्गीकरण करने में विश्लेषण करने में , तालिका आदि निर्माण में छापने में और याद रखने योग्य बातों को संग्रहण (स्टाक) करने में आधुनिक युग में बहुत उपयोगी है । जबकि भारतवर्ष में विलम्ब से आया लेकिन इसका आविष्कार 1946 ई . सन् में ही ब्रेनड और इंकटमैन्युली महोदय के द्वारा किया गया था । हेलीकॉप्टर नामक वायुयान को दुर्गम स्थलों पर भी यात्री और माल ढोने के कार्य को संचालित किया जाता है । उसका आविष्कार एटीन ओहमिसेज नामक वैज्ञानिकों के द्वारा हुआ । जी ब्रेड शॉ महोदय अत्यन्त उपयोगी स्कूटरयान का आविष्कार किया था । डायनामाइट नामक प्रभावशाली चूर्ण से कठोर पत्थर भी टूट जाते हैं । इसका आविष्कार स्वीडेन निवासी अल्फ्रेड नोबल महोदय ने किया था । उसी के नाम से और उन्हीं के द्वारा दी गयी राशि से विश्व प्रसिद्ध नोबल पुरस्कार दिया जाता है ।

यद्यपि सहस्राधिकानां ..... उपकरणानि सूचितानि ।

अर्थ – जबकि हजारों से अधिक विज्ञान उपकरणों का प्रयोग दिन – रात हो रहा है और प्रतिदिन नये – नये आविष्कार सुविधा के लिए लोग कर रहे हैं । आयुर्विज्ञान के आविष्कार से रोगों को दूर किया जाता है और लोगों के जीवन अवधि बढ़ रही है । यहाँ पर कुछ ही उपकरणों को बताया गया है ।

https://www.evidyarthi.in/

शब्दार्थ –

अधुना = आजकल । शतम् = सौ । विज्ञानप्रभवाणि = विज्ञान से उत्पन्न । प्रविष्टानि = प्रवेश किये हुए । वैदेशिकैः = विदेशियों द्वारा । सम्प्रति = आजकल । रेलस्थानकानि = रेल – स्टेशन । रेलचालकयन्त्रम् = रेल इंजन । विद्युबल्बलस्य = विजली – बल्ब का । विद्युतः = बिजली का / की / के । कृतज्ञाः = किये गये उपकार को जानने वाले , ऋणी । कृतवान् = किया गया । गृह्यन्ते = ग्रहण किये जाते हैं । कृतः = किया । आविष्कृतवन्तौ = आविष्कार / खोज किये (द्विवचन) । महदुपकारकम् = बड़ा उपयोगी , महान उपकारक । सिध्यति = सिद्ध होता है । चित्रस्थपात्राणाम् = चित्र स्थित पात्रों / व्यक्तियों का / के / की । शृणुमः = (हम) सुनते हैं । लघुकायमपि (लघुकायम् + अपि) = छोटा शरीर होने पर भी । श्रेणीकरणे = वर्गीकरण में । स्मृतिसंग्रहणे = याद करने योग्य (तथ्यों) को इकट्ठा करने में । समागतम् = आया । यानवाहनयोः कार्यम् = सवारी एवं माल ढुलाई के काम को । अत्युपयोगिनः = अधिक उपयोगी (का / की / के) । भज्यन्ते = तोड़े जाते हैं । तस्यैव (तस्य + एव) = उसके ही । सहस्राधिकानाम् = हजार से अधिक (का / की / के) । अहर्निशम् = दिन – रात । आयुर्विज्ञानस्य = चिकित्साशस्त्र का । जीवनावधिश्च = आयु , जीवनकाल । कानिचनैव (कानिचन + एव) = कुछ ही । सूचितानि = बताये गये (है) ।

व्याकरणम्

सन्धिविच्छेदः

तथैव = तथा + एव (वृद्धि सन्धि) । नास्ति = न + अस्ति (दीर्घ सन्धि) ।
पूर्वमासीत् = पूर्वम् + आसीत् । वैज्ञानिकान्युपकरणानि = वैज्ञानिकानि + उपकरणानि (यण् सन्धि) ।
सर्वाण्यपि = सर्वाणि + अपि (यण् सन्धिः) । जनैराविष्कृतानि = जनैः + आविष्कृतानि (विसर्ग सन्धि) ।
निर्मितमासीत् = निर्मितम् + आसीत् ।
एवमेव = एवम् + एव ।
शीघ्रमेवासंख्यानि = शीघ्रम् + एव + असंख्यानि (दीर्घ सन्धि) ।
संसारस्योपकारः = संसारस्य + उपकारः (गुण सन्धि) ।
चाविष्कारम् = च + आविष्कारम् (दीर्घ सन्धि) । यन्त्रमनिवार्यम् = यन्त्रम् + अनिवार्यम् । तदाविष्काराय = तत् + आविष्काराय (व्यञ्जन सन्धि) ।
महदुपकारकम् = महत् + उपकारकम् (व्यञ्जन सन्धि) ।
दुर्गमस्थलेष्वपि = दुर्गमस्थलेषु + अपि (यण् सन्धि) ।
तस्याविष्कारः = तस्य + आविष्कारः (दीर्घ सन्धि) । अत्युपयोगिनः = अति + उपयोगिनः (यण् सन्धि) ।
आविष्कारमकरोत् = आविष्कारम् + अकरोत् । तस्यैव = तस्य + एव (वृद्धि सन्धि) । सहस्राधिकानाम् = सहन + अधिकानाम् (दीर्घ सन्धिः) ।
विज्ञानोपकरणानाम् = विज्ञान + उपकरणानाम् (गुण सन्धि) ।
अहर्निशम् = अहः + निशम् (विसर्ग सन्धि) । जीवनावधिश्च = जीवन + अवधिः + च (दीर्घ सन्धि , विसर्ग सन्धि) ।

प्रकृति – प्रत्यय – विभाग :

अनुभवन्ति =√अनु + , लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
व्यवहरन्ति =√वि + अव + इह , लट् लकार , प्रथम पुरुष , बहुवचन
गन्तुम् =√गम्+ तुमुन्
आविष्कृतानि =आ + वि +√कृ , क्त , नपुंसकलिङ्ग , बहुवचन
कृतः=√कृ , क्त , पुल्लिंग , एकवचन

https://www.evidyarthi.in/

कृतवान् =√कृ+ क्तवतु , पुंल्लिंग , एकवचन आविष्कृतवन्तौ =आ + वि +√कृ+ क्तवतु , पुल्लिंग , द्विवचन
शृणुमः =√श्रु , लट् लकार , उत्तम पुरुष , बहुवचन भज्यन्ते =√भज् , यक् (कर्मवाच्य) प्रथम पुरुष , बहुवचन
प्रदीयते =प्र +√दा + यक् (कर्मवाच्य) प्रथम पुरुष , एकवचन
आविष्क्रियन्ते =आ + वि + √कृ , यक् (कर्मवाच्य) प्रथम पुरुष , बहुवचन
संचालयति =सम् + √चल णिच् लट्लकार प्रथम पुरुष , एकवचन

evidyarthi

https://www.evidyarthi.in/